लिङ्गाष्टकम्

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

लिङ्गाष्टकम्

प्रकार	अष्टकम्
देवता	भगवान शिव
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	शैव
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Traditional stotra (author not firmly established)
आभार	पारम्परिक; सार्वजनिक। अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।

brahmamurārisurārcitaliṅgaṃ nirmalabhāsitaśobhitaliṅgam |

जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

janmajaduḥkhavināśakaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।

devamunipravarārcitaliṅgaṃ kāmadahaṃ karuṇākaraliṅgam |

रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

rāvaṇadarpavināśanaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।

sarvasugandhisulepitaliṅgaṃ buddhivivardhanakāraṇaliṅgam |

सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

siddhasurāsuravanditaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।

kanakamahāmaṇibhūṣitaliṅgaṃ phaṇipativeṣṭitaśobhitaliṅgam |

दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

dakṣasuyajñavināśanaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।

kuṅkumacandanalepitaliṅgaṃ paṅkajahārasuśobhitaliṅgam |

सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

sañcitapāpavināśanaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।

devagaṇārcitasevitaliṅgaṃ bhāvairbhaktibhireva ca liṅgam |

दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

dinakarakoṭiprabhākaraliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।

aṣṭadaloparivēṣṭitaliṅgaṃ sarvasamudbhavakāraṇaliṅgam |

अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

aṣṭadaridravināśitaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।

suragurusuravarapūjitaliṅgaṃ suravanapuṣpasadārcitaliṅgam |

परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥

parātparaṃ paramātmakaliṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam ||

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।

liṅgāṣṭakamidaṃ puṇyaṃ yaḥ paṭhecchivasannidhau |

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

śivalokamavāpnoti śivena saha modate ||

अर्थ

मैं उस सदाशिव लिंग को प्रणाम करता/करती हूँ — जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और देवता पूजा करते हैं, जो निर्मल और प्रकाशमान है, जो जन्म के दुःखों का नाश करता है; जिसकी श्रेष्ठ देव और मुनि पूजा करते हैं, जिसने काम को भस्म किया, जो करुणा का सागर है और जिसने रावण का दर्प तोड़ा; जो सब सुगन्धों से लिप्त है, बुद्धि बढ़ाता है, जिसकी सिद्ध, देव और असुर वन्दना करते हैं; जो स्वर्ण और महामणियों से भूषित, सर्पराज से वेष्टित है और जिसने दक्ष-यज्ञ का विनाश किया; जो कुमकुम-चन्दन से लिप्त, कमलों के हार से सुशोभित है और संचित पापों का नाश करता है; जिसकी देवगण भाव और भक्ति से सेवा करते हैं, जो करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान है; जो अष्टदल कमल पर स्थित, सारी सृष्टि का कारण और आठ प्रकार की दरिद्रता का नाशक है; जिसकी देवगुरु और श्रेष्ठ देवता देववन के पुष्पों से पूजा करते हैं — जो परात्पर परमात्मा है। अन्तिम श्लोक कहता है कि शिव के समीप इसका पाठ करने वाला शिवलोक पाता है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।